महर्षि याज्ञवल्क्य और राजा जनक

बृहदारण्यक उपनिषद् से एक कहानी

एक बार की बात है, अग्निहोत्र यज्ञ के दौरान, विदेह के राजा जनक और महर्षि याज्ञवल्क्य के बीच वार्तालाप चल रहा था। याज्ञवल्क्य ने राजा जनक को एक वर प्रदान किया। यह वर मिलने पर राजा जनक ने याज्ञवल्क्य से एक प्रश्न पूछने का निर्णय किया और याज्ञवल्क्य ने उनकी इस विनती को स्वीकार किया। राजा जनक ने अपना प्रश्न पूछते हुए कहा :

“ऋषि याज्ञवल्क्य, ऐसा क्या है जो मानव के लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है?”

“सूर्य, महाराज,” उन्होंने उत्तर दिया। “प्रकाशरूपी सूर्य के कारण वह उठता-बैठता है, चलता-फिरता है, अपना कार्य करता है और फिर से वापस आता है।”

“निस्सन्देह, ऋषिवर।”

“पर ऋषिवर जब सूर्यास्त हो जाता है, तब वह क्या है जो मानव के लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है?”

“तब चन्द्रमा उसके लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है,” उन्होंने कहा, “प्रकाशरूपी चन्द्रमा के कारण वह उठता-बैठता है, चलता-फिरता है, अपना कार्य करता है और फिर से वापस आता है।”

“निस्सन्देह, ऋषिवर।”

“परन्तु ऋषिवर, जब सूर्यास्त हो चुका होता है, चन्द्रास्त हो चुका होता है तब वह क्या है जो मानव के लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है?”

“तब अग्नि उसके लिए प्रकाशरूप में कार्य करती है,” उन्होंने कहा, “प्रकाशरूपी अग्नि के कारण वह उठता-बैठता है, चलता-फिरता है, अपना कार्य करता है और फिर से वापस आता है।”

“निस्सन्देह, ऋषिवर।”

“परन्तु जब सूर्यास्त हो चुका होता है, चन्द्रास्त हो चुका होता है, अग्नि बुझ चुकी होती है तब वह क्या है जो मानव के लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है?”

“तब वाणी उसके लिए प्रकाशरूप में कार्य करती है,” महर्षि ने कहा, “प्रकाशरूपी वाणी के कारण वह उठता-बैठता है, चलता-फिरता है, अपना कार्य करता है और फिर से वापस आता है। अतः, हे राजन्,

जब मानव को अपना स्वयं का हाथ भी नहीं सूझता, तब एक वाणी को सुनने पर वह सीधा उसकी ओर जाता है।"

"निस्सन्देह, ऋषिवर।"

"परन्तु जब सूर्यास्त हो चुका होता है, चन्द्रास्त हो चुका होता है, अग्नि बुझ चुकी होती है और वाणी शान्त हो चुकी होती है तब वह क्या है जो मानव के लिए प्रकाशरूप में कार्य करता है?"

"तब आत्मा उसके लिए प्रकाशरूप में कार्य करती है," उन्होंने कहा, "प्रकाशरूपी आत्मा के कारण वह उठता-बैठता है, चलता-फिरता है, अपना कार्य करता है और फिर से वापस आता है।"

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

रेमोंदो पन्निकर [सन् १९१८-२०१०], स्पेन के एक रोमन कैथलिक पादरी व विद्वान थे। वे परस्पर धार्मिक संवाद के समर्थक थे। अपनी पुस्तक *The Vedic Experience: Mantramanjari* [द वैदिक एक्सपीरियन्स : मन्त्रमन्जरी] में डॉ. पन्निकर वेदों, अरण्यकों, और उपनिषदों सहित भारतीय शास्त्रों के कई अंशों की व्याख्या करते हैं।

सन् १९९६ में महायात्रा टीचिंग विज़िट के दौरान जब गुरुमाई जी स्पेन में थीं, तब उन्होंने सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक, स्वामी शान्तानन्द को डॉ. पन्निकर से मिलने के लिए कहा। कुछ दिन बाद स्वामी जी डॉ. पन्निकर के घर गए और उनसे मिले। वहाँ उन दोनों के बीच डॉ. पन्निकर के कार्य के विषय में उत्तम चर्चा हुई।

स्वामी शान्तानन्द कहते हैं, "डॉ. पन्निकर एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। वे पूर्वी तथा पश्चिमी दर्शन के समागम में रुचि रखते थे। वे अनेक भाषाओं में सहजता से बोलते व लिखते थे; उन्हें संगीत भी अत्यन्त प्रिय था। उनके ज्ञान की व्यापकता और गहराई ने मुझ पर एक अमिट छाप छोड़ी है।"

बृहदारण्यक उपनिषद् : IV, ३, १-६।

[अनुवाद] रेमोंदो पन्निकर, *The Vedic Experience: Mantramanjari* [लॉस एन्जलॅस् : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, १९७७] पृ. ३३४: iii।